E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वामी विवेकानंद के दर्शन एवं शिक्षा की राजनीतिक प्रासंगिकता

अंजली कुशवाहा
शोध छात्रा राजनीति विज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर (म. प्र.)
डॉ. ज्योति कुशवाह
प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय
(म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/11/2025

Paper date Publishing Date

10/11/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17955583

IMPACT FACTOR
5.924

शोध सार

स्वामी विवेकानंद उन्नीसवीं सदी के ऐसे युगपुरुष थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म को विश्व पटल पर स्थापित किया। उनके विचार केवल धार्मिक और आध्यात्मिक नहीं थे, बल्कि सामाजिक सुधार, शिक्षा, राष्ट्रवाद और वैश्विक भाईचारे से भी जुड़े हुए थे। उनका जीवन दर्शन अद्वैत वेदांत पर आधारित था, जिसमें उन्होंने आत्मा और परमात्मा की एकता पर बल दिया। विवेकानंद का मानना था कि प्रत्येक मानव के भीतर अपार शक्ति और संभावनाएँ छिपी हुई हैं, आवश्यकता केवल उन्हें पहचानने और विकसित करने की है।

सामाजिक दृष्टि से विवेकानंद ने जातिवाद, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा और सशक्तिकरण को समाज की प्रगति का मूल आधार माना। उनके अनुसार धर्म का वास्तविक स्वरूप केवल कर्मकांड नहीं बल्कि सेवा है, और दरिद्र नारायण सेवा को उन्होंने ईश्वर की सच्ची उपासना बताया। राजनीति के क्षेत्र में उनका दृष्टिकोण अत्यंत आधुनिक और व्यावहारिक था। वे कहते थे कि राजनीति का उद्देश्य केवल पुस्तक ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मबल और राष्ट्र निर्माण होना चाहिए। उन्होंने "Man & making Education and Politics" की अवधारणा दी, जो आज भी प्रासंगिक है ।

राष्ट्रवाद के संदर्भ में विवेकानंद युवाओं को राष्ट्र निर्माण की धुरी मानते थे। उनका प्रसिद्ध नारा उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको युवाओं को आत्मबल, परिश्रम और समर्पण की प्रेरणा देता है। उन्होंने भारत की प्राचीन संस्कृति और गौरव को पुनः स्थापित करने का आह्वान किया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वैश्विक स्तर पर उन्होंने शिकागो धर्म संसद (1893) में अपने भाषण के माध्यम से धार्मिक सहिष्णुता, सर्वधर्म समभाव और वैश्विक भाईचारे का संदेश दिया, जिसने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया।

आज के समय में भी विवेकानंद के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके जीवनकाल में थे। शिक्षा, राष्ट्र निर्माण, स्त्री सशक्तिकरण, राजनीति, वैश्विक शांति और मानवीय मूल्य जैसे क्षेत्रों में उनके दर्शन को मार्गदर्शक माना जाता है। आधुनिक समाज की चुनौतियाँ जैसे भ्रष्टाचार, हिंसा, बेरोजगारी और मानसिक तनाव का समाधान उनके सकारात्मक चिंतन और सेवा भाव में निहित है। स्वामी विवेकानंद के विचार कालातीत हैं और मानव समाज के लिए आज भी राजनीति में प्रकाश स्तंभ की तरह मार्गदर्शन करते हैं।

मुख्य बिन्दु :- सामाजिक, विकसित, जातिवाद, अंधविश्वास, आत्मबल।

स्वामी विवेकानंद जी भारतीय और विश्व इतिहास के उन महान व्यक्तियों में से हैं, जो राष्ट्रीय जीवन को एक नई दिशा प्रदान करने में एक अमृत धारा की भांति हैं। स्वामी जी के व्यक्तित्व और विचारों में भारतीय संस्कृति परंपरा के सर्वश्रेष्ठ तत्व निहित थे। उनका जीवन भारत के लिए वरदान थे। स्वामी जी का संपूर्ण जीवन माँ भारती और भारतवासियों की सेवा हेतु समर्पित था। उनका व्यक्तित्व विशाल समुद्र की भाँति था।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन उच्चकोटि का था। उनके विचारों में विराटता एवं विशालता थी। विवेकानंद की जीवन शैली नवयुवकों के लिए अनुसरण करने के योग्य है। उन्होंने सभी राजनेताओं को जीवन के आदर्श से परिचय कराया, जिससे प्रत्येक व्यक्ति उसे जीवन में उतार कर नये आदर्श स्थापित कर सके।

प्रखर बुद्धि के स्वामी और तर्क विचारों से सुसज्जित जलते दीपक की तरह प्रकाशमान थे। उनके अंतःकरण में तेज ज्वाला थी। यही कारण है कि उनके विचारों से हमें प्रेरणा, नव चेतना तथा स्फूर्ति प्राप्त होती है, हमारे

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अतःकरण में आलोकित प्रस्फुटित ज्वाला प्रज्जवलित होती है। उनके विचार शिक्षा और दर्शन इतने प्रभावी हैं कि स्वामी जी के द्वारा दिए गए सैकड़ों वक्तव्यों में से कोई एक वक्तव्य महान् क्रांति करने के लिए, व्यक्ति के जीवन में आमूल परिवर्तन करने परिवर्तन करने में समर्थ है । (1)

स्वामी जी का जीवन दर्शन वास्तव में भारत का वास्तविक जीवन दर्शन है। स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था, उनका जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कलकता के अभिजात क्षत्रिय परिवार में हुआ। स 1881 में उनकी मुलाकात रामकृष्ण परमहंस से हुई। सन 1886 में श्री रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के समय विवेकानंद उनके सर्वप्रिय शिष्य थे। अब विवेकानंद जी लंबी यात्राएँ प्रारंभ की।

वे भारतीय संस्कृति के सभी महत्वपूर्ण केन्द्रों में गए और हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक इस विशाल देश का कोना-कोना छान मारा। उनकी कुशाग्र बुद्धि और संवेदनशील हदय ने हजारों बातें आत्मसात की | (2)

सन् 11 सितंबर 1893 ई. में शिकागों (अमरीका) के विश्व धर्म सम्मेलन में वे भारत के प्रतिनिधि बनकर गए। उन्होंने हिन्दू धर्म का आध्यात्मिक आधार पर सम्मलेन में जीवंत विवेचन दिया । इस विवेचन के समक्ष पश्चिमी धर्मों का दिवालियापन स्पष्ट हो गया। जिस स्पष्टता और सूक्ष्मता से विवेकानंद ने वेदांत की व्याख्या की पाश्चात्य विद्वानों को यह जीवन का अंतिम सत्य मालूम पड़ने लगा ।

स्वामी जी ने अनेक देशों का भ्रमण किया। उस भ्रमण के दौरान वे अनेक व्यक्तियों से मिले एवं अनेक समस्याओं, रीति-रिवाजों, संस्कृतियों तथा परिस्थितियों का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किया। 4 जुलाई 1902 को स्वामी विवेकानंद की मृत्यु हो गई। स्वामी जी एक महान राष्ट्रवादी, देशभक्त तथा विश्व-बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत थे ।

स्वामी विवेकानंद का राजनीतिक दर्शन व्यवहारिक है, जिसमें जीवन के बहुत से उतार-चढ़ाव के साथ-साथ राजनीति के सिद्धान्त और प्रतिमान है। प्रत्येक राजनेता को लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति एवं विकास के लिए जीवन में नये सिद्धान्तों को स्थापित करना चाहिए, जिससे राज्य एवं राष्ट्र का विकास हो सके।

स्वामी विवेकानंद जी प्राचीन भारतीय संस्कृति के केवल मानने वाले ही नही बल्कि उनके सच्चे उपासक भी थे। स्वामी जी ने भारत के जन-समुदाय के सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को निकट से देखा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तथा समझा था। इस जानकारी के पृष्ठभूमि में ही उनका दार्शनिक चिन्तन का उद्भव हुआ । स्वामी जी भारतीय संस्कृति के प्राचीनता और महत्व को जानने और समझने के लिए भारत वासियों को सदैव प्रेरित करते रहे । संस्कृति के संदर्भ में उनका मानना था कि वैदिक संस्कृति भारत की आत्मा है और यहाॅ की आध्यामिकता (भारत वर्ष) इन का मेरूदण्ड हैं। (3)

स्वामी जी मानते थे कि जब व्यक्ति संस्कारवश अच्छे कार्य करता है तभी उसका चरित्र गठित होता है । वे कहते थे कि बुराईयों का कारण मनुष्य में ही निहित है, किसी दैवीय सत्ता में नही । मनुष्य रेशम के कीड़ें के समान है, वह अपने आप से ही सूत निकालकर कोष बना लेता है और फिर उसी में बंदी हो जाता है। इस जाल को व्यक्ति स्वयं ही नष्ट कर सकता है कोई दूसरा नहीं ।

वे कहते थे तुम्हारे अंदर जो कुछ है अपनी शक्तियों द्वारा उसका विकास करो पर कभी भी दूसरों का अनुसरण करके नही । वे नवयुवकों को ध्येयवादी होने निरंतर प्रेरणा देते रहते थे। वे भारत को अमर भारत की संज्ञा देते थे। स्वामी जी हमेशा कहते थे कि यदि भारतवासियों ने पाश्चत्य भौतिकवादी सभ्यता के चक्कर में पड़कर आध्यात्मिकता का आधार त्याग दिया तो उनके परिणाम स्वरूप तीन पीढ़ियों में ही उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, जिसका सीधा परिणाम होगा सर्वतोन्मुखी सत्यानाश । स्वामी जी कहते थे कि अन्य व्यतियों से हम जो लेना चाहें ले ग्रहण करें किन्तु उसे जीवन के आदर्श के अधीन करे ।

स्वामी विवेकानंद के राजनीतिक दर्शन में स्पष्टवादिता, राष्ट्रीय संस्कृति एवं कला भारत का आध्यात्म एवं चिंतन के रचनाधर्मता पायी जाती है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति एक नयी सांस्कृतिक अवधारणा से जुड़े। आज की नयी पीढ़ी अपने मूल्यों से दूर होती जा रही है, जिससे उसके जीवन में बहुत से बदलाव आ रहे है। विवेकानंद एक आचरणयुक्त व्यक्तित्व के धनी थे। उनके जीवन में विभिन्न प्रकार की सामायिक योजनाऐं थी, जो राजनीति के आधार थे ।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन दूरदृष्टि था उनके विचारों में दिव्यता झलकती थी वे जो भी कहते थे बिल्कुल सटीक और मानव के भवनाओं व मास्तिष्क पर सीधे पहुँचने वाले होते थे। स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति के विषय में, जो भी कहा आज हमारे सामने परिणाम स्वरूप प्रकट हो रहे है । क्योंकि भारतीय संस्कृति की

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मधुरता पवित्रता और महक धीरे-धीरे लुप्तता के कगार पर खड़ी दिखाई पड़ने लगी है, भारतीय संस्कार और परंपरा जो प्रत्येक रिश्ते-नाते की पवित्रता बनाए रखती थी, आज के परिदृश्य में भारत माँ के दामन में क्रूरता के बीज बो रही है, क्योंकि आज की आधुनिकता मानवता के पवित्र रिश्ते को दागदार कर दिया है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभ पर गहरा प्रहार किया है, क्योंकि खून के रिश्ते अब खून के प्यासे हो गये है बेटे बाप के, भाई-भाई के, माँ-बेटी के बीच नफरत की दीवार खड़ी दी है जो कि मानवता के लिए अत्यंत हानिकारक है। इसका मूल कारण है भारतीय संस्कृति को तुच्छ जानना और आधुनिकता के नशें मे चूर विदेशी सभ्यता और संस्कृति को आत्मसात् कर लेना। भारतीय संस्कृति, ज्ञान और संस्कारों को त्याग देना मूल कारण है। (4)

स्वामी विवेकानंद जी एक सौ दस वर्ष पहले जो आशंका जताई थी वह आज हमें देखने को मिल रहा है। स्वामी विवेकानंद एक सच्चे वेदांती थे वह सत्य के अनुपालन के समर्थक थे और उनकी दृष्टि में सत्य वही है जिससे व्यक्ति एवं समष्टि दोनों का हित हो उन्होंनें प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति को जीवन के शाश्वत मूल्यों के रूप में स्वीकार किया। अब हमारे समक्ष प्रश्न यह उठता है कि क्या हम सच्चे मायने में भारतीय हैं और भारत के मूल संस्कृति को अपने में समाहित किए हुए है ? मित्रों हमारे पास अभी-भी अवसर है सनातन, वैदिक संस्कृति को समझने, जानने और आत्मसात् कर लेने की। हमारे मूल सांस्कृतिक गरिमा को अपने में पुनर्जिवित करने की ।

स्वामी विवेकानंद सुरक्षा और विकास को परस्पर एक दूसरे का पर्याय मानते थे, जिसके आधार पर राजनीति का ढाँचा खड़ा रहता है। उनके मापदण्ड में राष्ट्रीय निष्पक्षता, राष्ट्रवाद, देशवाद, गरीबों से प्रेम करना तथा मानवीय नीतियों का विस्तारीकरण करना प्रत्येक नेता का धर्म है, जिससे समाज में पुरूषार्थ और पराक्रम की विचारधारा सशक्त बनी रहे ।

स्वामी विवेकानंद जी के दर्शन और उच्च विचारधारा को स्वीकार करके राष्ट्र और समाज के प्रत्येक व्यक्तियों में सांस्कृतिक एकता और जागृति लाने की है। हे जवानों उठो, ये देश है तुम्हारा माँ भारती पुकारती है अपनी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सच्ची संस्कृति को पहचानों और मानसिक दासता के बोड़ियों से स्वतंत्र हो जाओं । मित्रों वास्तव में संस्कृति हमेशा विशिष्ट होती है और दूसरे प्रतिबद्ध उतराधिकारी समाज, विशिष्ट समाज होता है । (5)

संस्कृति लोगों की जीवन रीति है एक संस्कृति व्यवहार की वह व्यवस्था है जिसमें किसी समाज के सदस्य सहभागी होते है और समाज वह जनसमूह है जो एक सर्वनिष्ट संस्कृति है, जिसमें मानव के जीवन मूल्य और ज्ञान का असीम भण्डार है। जीवन मूल रहस्य को यदि जानना है, तो वैदिक संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है। मानव जीवन के इतिहास को जानने का सबसे प्राचीन साहित्य वेद है, विश्व के इतिहास में अति प्राचीन और प्रमाणित साहित्य है ।

स्वामी विवेकानंद के दर्शन में राष्ट्रीयता और प्रजातंत्र आलौकिक स्वरूप था, जिसमें राष्ट्रीयता के अलावा प्रजातंत्र को सशक्त बनाने के विचार थे, जिससे आमजन में नया विश्वास पैदा हो और लोग प्रजातंत्र का सम्मान करे ।

स्वामी विवेकानंद जी ऐसे परम्परागत व्यवसायिक तकनीकी शिक्षा शास्त्री न थे, जिन्होंने शिक्षा का क्रमबद्ध सुनिश्चित विवरण दिया हो। वह मुख्यत एक दार्शनिक, देशभक्त, समाज सुधारक और दिव्यात्मा थे जिनका लक्ष्य अपने देश और समाज की खोयी हुई जनता को जगाना तथा उसे नव निर्माण के पथ पर अग्रसर करना था । शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में स्वामी जी की तुलना विश्व के महानतम् शिक्षा शास्त्रियों प्लेटो, रूसों, और बट्रैण्ड रसेल से की जा सकती है क्योंकि उन्होंने शिक्षा के कुछ सिद्धांत प्रस्तुत किए है, जिनके आधार पर विशाल ज्ञान का भवन निर्माण तकनीकी रूप से कर सकते है।

स्वामी जी के शैक्षिक विचार भी उनकी वेदांत विचारधारा से प्रेरित है। उनका मुख्य उद्देश्य थे मानव का नवनिर्माण क्योंकि व्यक्ति समाज का मूल आधार है। व्यक्ति के सर्वागीण उत्थान से समाज का सर्वागीण उत्थान होता है और व्यक्ति के पतन से समाज का पतन होता है स्वामी जी ने अपने शिक्षा दर्शन में व्यक्ति और समाज दोनों के समरस संतुलित विकास को ही शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य माना ।

स्वामी जी के अनुसार वेदांत दर्शन में प्रत्येक बालक में असीम ज्ञान और विकास की सम्भावना है परन्तु उसे इन शक्तियों का पता नहीं है। शिक्षा द्वारा उसे इनकी प्रतीति कराई जाती है तथा उनके उत्तरोतर विकास में

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

छात्र की सहायता की जाती है। स्वामी जी वेदांती थे इसलिए वे मनुष्य को जन्म से पूर्ण मानते थे और इस पूर्वता की अभिव्यक्ति को ही शिक्षा कहते थे। स्वामी जी के शब्दों में मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को व्यक्त करना ही शिक्षा है स्वामी विवेकानंद लोगों का नैतिक गुणों तथा व्यक्ति के गौरव के समर्थक थे । (6)

स्वामी विवेकानंद शिक्षा के विषय में कहते है कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। वह शब्दों को रटना मात्र नहीं है। वह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास है, जिससे वह स्वयंमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार कर ठीक-ठीक निर्णय कर सकें। इक्कसवीं शताब्दी के बदलते परिवेश में जहाँ सूचना और प्रौद्योगिकी का युग चल रहा है वहाँ भारत की वर्तमान शिक्षा पद्धति सहज उपलब्धि वितरण करने के अतिरिक्त और कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त नही की गई हैं वहाँ स्वामी जी के चिंतन को अपनाना आवश्यक है ।

स्वामी जी शिक्षा के वर्तमान रूप को अभावात्मक बताते थे जिनके विद्याथियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नही होता, उन्हें जीवन के वास्तविक मूल्यों का पाठ नही पढ़ाया जा सकता तथा उनमे श्रद्धा का भाव नही पनपता है ।

स्वामी जी का मानना था कि भारत के पिछड़ेपन के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति भी उत्तरदायी है। यह शिक्षा न तो उत्तम जीवन जीने की तकनीक प्रदान करती है और न ही बुद्धि का नैसर्गिक विकास करने में सक्षम है। स्वामी जी आधुनिक शिक्षा पद्धति की अलोचना करते हुए लिखा ऐसा प्रशिक्षण जो नकारात्मक पद्धति पर आधारित हो, मृत्यु से भी बुरा हैं। बालक स्कूल में जाता है और पहली बात सीखता है कि उसका पिता मूर्ख है, दूसरी बात सीखता है कि उसका बाबा पागल है, तीसरी बात कि उसके सभी शिक्षक पाखण्डी हैं, चौथी कि सभी पवित्र ग्रंथ झूठे है ।

वर्ष के होते-होते तो विद्यार्थी निषेधों का एक समूह, अस्थिहीन और वहीन बन जाता है यही कारण है कि पचास वर्षो में भी यह शिक्षा एक भी मौलिक व्यक्ति उत्पन्न नही कर सकी । प्रत्येक व्यक्ति जिसमें मौलिकता नही है, उसे देश में नही बल्कि कही और पढ़ाया गया है अथवा फिर से अन्धविश्वासों से मुक्त होने के लिए अपने देश के पुरातन शिक्षालयों में जाना पड़ा है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वामी विवेकानंद भारतीयों के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण से प्रभावित शिक्षा पद्धति को उचित नही मानते थे । वे शिक्षा की भारतीय पद्धति गुरूकुल पद्धति को श्रेष्ठ मानते थे जिसमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में निकटता के संबंध तथा सम्पर्क रह सके और विद्यार्थियों के श्रद्धा, पवित्रता, ज्ञान, धैर्य, विश्वास, विनम्रता, आदर आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास हो सकें। स्वामी जी भारतीय शिक्षा पाठ्यक्रम में दर्शनशास्त्र एवं धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन को भी आवश्यक मानते थे वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो संकीर्ण मानसिकता तथा भेदभाव साम्प्रदायिकता दोषों से मुक्त हो ।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के मूल उदेश्य, जिसमें व्यक्ति का सर्वागीण विकास हो । उतम चरित्र, मानसिक शक्ति और बौद्धिक विकास हो, जिसमें व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में धन अर्जित कर सके और आपात काल के लिए धन संचय कर सके। स्वामी जी का शिक्षा दर्शन मानव निर्माण, चरित्र निर्माण शारीरिक विकास, बैद्धिक विकास, मानसिक विकास, उत्तम चिंतन एवं आत्मविश्वास का विकास, एकाग्रता शक्ति का विकास, आध्यामिक गुणों का विकास, स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास करना था। वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं समाज में नैतिक गुणों का हास हुआ है उसे स्वामी जी के विचारों को अपनाकार ही समाप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. गुप्त, राजेन्द्र प्रसाद स्वामी विवेकानंद व्यक्ति और विचार प्रकाशक - राधा पब्किकेशन नई दिल्ली संस्करण (1997), पृ. 52.

2. स्वामी, व्योमरूपानन्द विवेकानंद संचयन रामकृष्ण मठ नागपुर, पृ. 56.

3. स्वामी निखिलानंद विवेकानंद एक जीवनी प्रकाशक स्वामी बोधसारानन्द,अध्यक्ष अद्वैत आश्रम, कोलकाता संस्करण (2005) पृ. 51.

4. रहबर, हंसराजयोद्धा संन्यासी विवेकानंद प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली संस्करण (1998) पृ. 46.

5. स्वामी रंगानंद (मई - अगस्त 2008) स्वामी विवेकानंद और भारत का भविष्य पृ. 49.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. **सरित, सुशील एवं भार्गव अनिल आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिंतन एचत्रपीत्र भार्गव बुक हाउस आगरा- संस्करण** 2004 **पृ**.69.